International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

# स्वतन्त्रता से पूर्व की पत्रकारिता का अध्ययन

**[1]रीना पंत, [2]डॉ शोभा त्रिपाठी**

[1]शोधार्थी, द ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

[2]निर्देशक, द ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

**सारांश**

स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता भारत के स्वाधीनता संग्राम का एक महत्वपूर्ण आयाम थी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता ने एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य किया, जिसके द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने विचारों, आंदोलन की जानकारी और अंग्रेजी शासन की नीतियों की आलोचना को जन-जन तक पहुंचाया। पत्रकारिता का यह युग न केवल एक राजनीतिक संघर्ष था, बल्कि सांस्कृतिक, सामाजिक और वैचारिक आंदोलन का भी हिस्सा था, जिसने देशवासियों को संगठित किया और उन्हें विदेशी शासन से मुक्ति पाने की दिशा में प्रेरित किया। भारत में पत्रकारिता की शुरुआत 18वीं शताब्दी के अंत में हुई थी। 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिकी ने 'बंगाल गजट' नामक पहला अखबार प्रकाशित किया, जिसे भारतीय पत्रकारिता का आरंभिक रूप माना जाता है। हालांकि, यह अंग्रेजी शासन का समर्थन करने वाला था और इसके लेखन में स्वदेशी जनता के मुद्दों को प्रमुखता नहीं दी जाती थी। धीरे-धीरे भारतीय समाज में जागरूकता बढ़ी और अनेक भारतीय भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू हुआ। 19वीं शताब्दी के मध्य तक भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता का विकास हो चुका था, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को एक मजबूत वैचारिक आधार प्रदान किया।

**मुख्यशब्द-** स्वतन्त्रता, पत्रकारिता, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन

**प्रस्तावना:** भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के कई प्रमुख नेताओं ने पत्रकारिता को अपने आंदोलन का आधार बनाया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस आदि जैसे नेताओं ने अपने समाचार पत्रों और लेखों के माध्यम से अंग्रेजी शासन की आलोचना की और जनजागृति का काम किया। तिलक ने 'केसरी' और 'मराठा' नामक पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की क्रूर नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। उनका नारा "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" इन अखबारों के माध्यम से ही लोकप्रिय हुआ।

महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया', 'नवजीवन' और 'हरिजन' जैसी पत्रिकाओं के जरिए अपने अहिंसक आंदोलन के विचारों को जनता तक पहुंचाया। गांधीजी के लेखन में एक विशेष प्रकार की संयमित और

प्रेरणादायक शैली थी, जिसने जनता के मनोबल को ऊंचा उठाया और उन्हें सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता न केवल समाचार और जानकारी का माध्यम थी, बल्कि एक वैचारिक लड़ाई का भी हिस्सा थी। यह पत्रकारिता केवल स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष को सामने लाने का कार्य नहीं करती थी, बल्कि भारतीय समाज में हो रहे सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों को भी प्रतिबिंबित करती थी। पत्रकारिता ने समाज सुधार आंदोलनों जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, और जातिगत भेदभाव के खिलाफ जनचेतना फैलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजा राममोहन राय ने 'संविधान' और 'मिरात-उल-अखबार' जैसे अखबारों का इस्तेमाल करके समाज सुधार और धार्मिक सहिष्णुता की दिशा में कार्य किया।

स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ब्रिटिश सरकार ने प्रेस पर कठोर नियंत्रण लगाया और प्रेस एक्ट जैसे कानून बनाए। 1878 में ब्रिटिश सरकार ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट पारित किया, जिसके तहत सरकार किसी भी स्वदेशी भाषा के अखबार को बिना न्यायिक जांच के बंद कर सकती थी। इस कानून का उद्देश्य भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले उन समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को नियंत्रित करना था, जो ब्रिटिश सरकार की आलोचना करते थे। इस अधिनियम ने कई अखबारों को बंद कर दिया और पत्रकारों को जेल भेज दिया।

लेकिन इन कठोर कदमों ने भारतीय पत्रकारिता की आवाज को दबाया नहीं, बल्कि और अधिक प्रबल किया। इसके बाद भी कई स्वतंत्रता सेनानियों और पत्रकारों ने अपने लेखन को जारी रखा और सरकार के दमन के बावजूद स्वतंत्रता संग्राम की जानकारी जनता तक पहुंचाई।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एक और महत्वपूर्ण पहलू गुप्त प्रेस और क्रांतिकारी पत्रकारिता का रहा। अंग्रेजी सरकार की निगरानी के बावजूद क्रांतिकारी संगठनों ने गुप्त प्रेस के माध्यम से अपने पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित कीं। भगत सिंह और उनके साथियों ने 'किरती' पत्रिका के माध्यम से समाजवादी विचारों और क्रांतिकारी गतिविधियों को आगे बढ़ाया। इसी प्रकार, अनेक भूमिगत संगठनों ने अपने पत्र-पत्रिकाएं निकालकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जनमानस को तैयार किया।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिला पत्रकारों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। महिलाओं ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई, बल्कि पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी आवाज बुलंद

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

की। कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसफ अली, कमला देवी चट्टोपाध्याय जैसी महिलाओं ने पत्रकारिता के माध्यम से समाज को जागरूक किया और महिलाओं की भागीदारी को प्रेरित किया।

**स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता का उद्भव**

स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता का उद्भव 18वीं शताब्दी के अंत में हुआ, जब भारतीय समाज में जागरूकता और विचारों का संचार शुरू हुआ। यह वह समय था जब भारत में अंग्रेजों का राज स्थापित हो चुका था और भारतीय जनता को अपनी आवाज उठाने के लिए एक मंच की आवश्यकता महसूस होने लगी थी। पत्रकारिता का यह प्रारंभिक चरण न केवल सूचना के आदान-प्रदान का माध्यम बना, बल्कि यह राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता का भी साधन बन गया। 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिकी द्वारा 'बंगाल गजट' के प्रकाशन के साथ ही भारतीय पत्रकारिता का मार्ग प्रशस्त हुआ। हालाँकि, यह अखबार अंग्रेजी शासन का समर्थन करने वाला था और भारतीय मुद्दों को उचित ध्यान नहीं देता था। इसके बाद, 19वीं शताब्दी के मध्य तक, कई भारतीय भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित होने लगीं, जो कि जनता के विचारों और समस्याओं को उजागर करने का कार्य करने लगीं।

इस युग में पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी। स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने विचारों और उद्देश्यों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पत्रकारिता का सहारा लिया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने 'केसरी' और 'मराठा' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से जनता को जागरूक किया और ब्रिटिश शासन की नीतियों की खुलकर आलोचना की। उनका नारा "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" इसी माध्यम से गूंजा। तिलक ने पत्रकारिता के माध्यम से समाज को संगठित करने और स्वतंत्रता की भावना को बढ़ावा देने का कार्य किया।

महात्मा गांधी ने भी पत्रकारिता को अपने अहिंसक आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। उन्होंने 'यंग इंडिया', 'हरिजन', और 'नवजीवन' जैसे पत्रों के माध्यम से जन जागरूकता फैलाने का कार्य किया। गांधीजी का लेखन न केवल राजनीतिक विचारों को व्यक्त करता था, बल्कि यह समाज के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डालता था। उन्होंने समाज में फैली बुराइयों, जैसे छुआछूत और जातिवाद, के खिलाफ भी आवाज उठाई।

स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण पहलू गुप्त प्रेस और क्रांतिकारी पत्रकारिता का भी था। अंग्रेजी सरकार की सेंसरशिप और दमनकारी नीतियों के बावजूद, अनेक क्रांतिकारी संगठनों ने गुप्त रूप से पत्रिकाएं प्रकाशित कीं। भगत सिंह और उनके साथियों ने 'किरती' और 'वज़ीफे' जैसी

पत्रिकाओं के माध्यम से अपने विचारों का प्रचार किया, जो स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। महिला पत्रकारों का भी इस युग में योगदान महत्वपूर्ण था। कस्तूरबा गांधी और कमला देवी चट्टोपाध्याय जैसी महिलाओं ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया, बल्कि पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी आवाज उठाई और सामाजिक बदलाव के लिए संघर्ष किया।

इस तरह, स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता ने न केवल समाचार और जानकारी का आदान-प्रदान किया, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक आंदोलन का हिस्सा भी बनी। इसने स्वतंत्रता संग्राम की जड़ों को मजबूत किया और भारतीय जनमानस को जागरूक किया। यह पत्रकारिता का युग भारतीय समाज के लिए एक नई चेतना का संचार करने में सफल रहा, जो अंततः स्वतंत्रता की ओर ले गया। इस प्रकार, स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता ने भारतीय समाज में परिवर्तन लाने और राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ावा देने में एक अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

**प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी और पत्रकारों की भूमिका**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों और पत्रकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। स्वतंत्रता सेनानी न केवल अपने विचारों और आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य करते थे, बल्कि उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से ब्रिटिश शासन की आलोचना भी की और जनता को जागरूक किया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, पंडित नेहरू, और भगत सिंह जैसे नेताओं ने पत्रकारिता को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया। तिलक, जिन्हें "लोकमान्य" की उपाधि दी गई, ने 'केसरी' और 'मराठा' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की भावना को जागरूक किया। उनकी लेखनी ने न केवल लोगों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी, बल्कि उन्हें यह समझाया कि स्वराज प्राप्त करना उनका जन्मसिद्ध अधिकार है। तिलक के विचारों ने पूरे देश में एक नई चेतना का संचार किया और उन्होंने पत्रकारिता का इस्तेमाल कर भारतीय समाज को संगठित किया।

महात्मा गांधी ने भी पत्रकारिता का प्रभावी उपयोग किया। उन्होंने 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से अपने अहिंसक आंदोलन के विचारों को फैलाया। गांधीजी का लेखन सच्चाई, अहिंसा और सामाजिक सुधार की विचारधाराओं पर आधारित था। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से सामाजिक बुराइयों, जैसे जातिवाद और छुआछूत, की आलोचना की और भारतीय समाज को एकजुट होने की प्रेरणा दी। गांधीजी के विचारों ने न केवल भारतीयों को स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया, बल्कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत की स्थिति को उजागर किया।

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

पंडित जवाहरलाल नेहरू, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महत्वपूर्ण नेता थे, ने भी पत्रकारिता का उपयोग किया। उनकी पुस्तकें और लेख, जैसे 'ग्लिम्प्स ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री', ने भारतीय जनता को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सोचने की प्रेरणा दी। नेहरू ने पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक न्याय और समानता के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने अपने विचारों को प्रस्तुत करने के लिए अनेक पत्रिकाओं में लेख लिखे, जिससे उन्हें भारतीय जनमानस के बीच लोकप्रियता मिली।

भगत सिंह और उनके साथी क्रांतिकारियों ने भी पत्रकारिता के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भगत सिंह ने 'किरती' पत्रिका के संपादन के माध्यम से समाजवादी विचारों को फैलाया और ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह की भावना को जागृत किया। उनकी लेखनी ने युवाओं को प्रेरित किया और उन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने के लिए उत्साहित किया।

महिलाओं का योगदान भी इस संदर्भ में उल्लेखनीय रहा। कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसफ अली और अन्य महिलाओं ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया, बल्कि उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक सुधार के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। इस प्रकार, प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों और पत्रकारों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक अद्वितीय भूमिका निभाई। उनकी लेखनी ने भारतीय जनता में जागरूकता फैलाई, उन्हें संगठित किया और अंततः स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया। स्वतंत्रता संग्राम के इस महत्वपूर्ण युग में, पत्रकारिता ने न केवल सूचना का माध्यम बनाया, बल्कि यह एक विचारधारा, प्रेरणा और बदलाव का प्रतीक भी बनी। उनकी लेखनी और विचारों ने भारतीय समाज को एक नई दिशा दी और स्वतंत्रता के संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान किया।

## ब्रिटिश सरकार की सेंसरशिप और प्रेस एक्ट

ब्रिटिश सरकार की सेंसरशिप और प्रेस एक्ट ने स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता को अत्यधिक प्रभावित किया। जब भारतीय पत्रकारिता का विकास हो रहा था, तब ब्रिटिश शासन ने अपने औपनिवेशिक हितों की रक्षा के लिए कठोर कदम उठाए। 19वीं शताब्दी के अंत में, ब्रिटिश सरकार ने अनेक ऐसे कानून बनाए, जिनका उद्देश्य भारतीय पत्रकारों और प्रेस को नियंत्रित करना था। इनमें से एक प्रमुख कानून 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' था, जिसे 1878 में पारित किया गया। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य उन समाचार पत्रों और पत्रिकाओं पर नियंत्रण रखना था, जो भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होते थे और ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना करते थे। यह अधिनियम पत्रकारों के लिए अत्यधिक दमनकारी साबित हुआ, क्योंकि इसके तहत सरकार किसी भी समाचार पत्र को बिना किसी न्यायिक

प्रक्रिया के बंद कर सकती थी। इस कानून के लागू होने के बाद, कई प्रमुख पत्रिकाओं को बंद कर दिया गया, और पत्रकारों को जेल भेजा गया।

इसके अलावा, 1908 में 'सत्याग्रह' नामक एक अधिनियम पारित किया गया, जिसने स्वतंत्रता सेनानियों और पत्रकारों के खिलाफ और अधिक कठोरता से कार्यवाही करने का अधिकार दिया। इस कानून के अंतर्गत, किसी भी व्यक्ति को जो कि ब्रिटिश शासन की आलोचना करता था, गिरफ्तार किया जा सकता था। इससे एक ऐसा माहौल बना जिसमें पत्रकारिता को एक जोखिम भरा कार्य माना जाने लगा। इस दौरान, कई प्रमुख पत्रकारों और स्वतंत्रता सेनानियों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

महात्मा गांधी ने भी इन दमनकारी नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से इन अधिनियमों की निंदा की और लोगों को जागरूक किया। गांधीजी का मानना था कि प्रेस की स्वतंत्रता लोकतंत्र का अभिन्न हिस्सा है, और उन्होंने इसे स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण तत्व माना। उन्होंने अपनी पत्रिकाओं में इस विषय पर लिखकर लोगों को इन नीतियों के खिलाफ खड़ा होने के लिए प्रेरित किया।

सेंसरशिप के चलते, गुप्त प्रेस का विकास भी हुआ। स्वतंत्रता सेनानियों ने गुप्त रूप से पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं, जिससे वे अपनी आवाज को दबाने के प्रयासों का सामना कर सकें। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे क्रांतिकारियों ने 'किरती' और 'नवजवान' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से अपने विचारों को जनता तक पहुँचाया। ये पत्रिकाएँ न केवल स्वतंत्रता संग्राम की विचारधारा को फैलाने का कार्य करती थीं, बल्कि उन्होंने युवाओं को भी प्रेरित किया।

ब्रिटिश सरकार की सेंसरशिप ने पत्रकारों को न केवल आत्मसंयमित किया, बल्कि उनके लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेना भी कठिन बना दिया। इसके बावजूद, भारतीय पत्रकारों ने अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए विभिन्न रचनात्मक तरीकों का उपयोग किया। उन्होंने व्यंग्य, रूपक और आलोचना के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपनी बातें कहने का प्रयास किया।

इस प्रकार, ब्रिटिश सरकार की सेंसरशिप और प्रेस एक्ट ने भारतीय पत्रकारिता को नियंत्रित करने का कार्य किया, लेकिन इसके बावजूद, स्वतंत्रता सेनानियों और पत्रकारों ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष जारी रखा। इस संघर्ष ने न केवल भारतीय समाज को जागरूक किया, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाने में भी मदद की। अंततः, ये दमनकारी नीतियाँ भारतीय जनता के संघर्ष

International Journal For Advanced Research In Science & Technology
A peer reviewed international journal
www.ijarst.in
ISSN: 2457-0362

को और अधिक प्रबल बनाने में सहायक बनीं, और पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**भारतीय पत्रकारिता पर ब्रिटिश दमन और प्रतिरोध**

भारतीय पत्रकारिता पर ब्रिटिश दमन और प्रतिरोध का इतिहास भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसने न केवल जन जागरूकता बढ़ाई, बल्कि राष्ट्रीयता की भावना को भी मजबूत किया। जब भारतीय पत्रकारिता ने अपने पैरों पर खड़ा होना शुरू किया, तब ब्रिटिश सरकार ने इसे अपने राजनैतिक हितों के खिलाफ एक खतरे के रूप में देखा। इस प्रकार, 19वीं और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में, ब्रिटिश शासन ने पत्रकारिता को नियंत्रित करने के लिए कठोर उपाय किए। 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' (1878) जैसे दमनकारी कानूनों ने विशेष रूप से भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकाओं पर नकेल कसी। यह अधिनियम न केवल पत्रकारों के विचारों को दबाने के लिए था, बल्कि यह स्वतंत्रता संग्राम की आवाज़ को भी कमजोर करने के लिए बनाया गया था। इसके तहत, सरकार ने बिना किसी पूर्व सूचना के समाचार पत्रों को बंद करने, संपादकों को गिरफ्तार करने और पत्रकारों को प्रताड़ित करने का अधिकार प्राप्त किया।

इस प्रकार के दमन ने पत्रकारों को न केवल भौतिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी प्रभावित किया। कई प्रमुख पत्रकारों, जैसे लोकमान्य तिलक और सुभाष चंद्र बोस, को अपनी आवाज उठाने के लिए जेल की सलाखों के पीछे डाल दिया गया। तिलक ने 'केसरी' और 'मराठा' जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश शासन की नीतियों की खुलकर आलोचना की, जिससे उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया। तिलक ने अपने लेखन के माध्यम से लोगों को संगठित किया और उन्हें अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। उनके लेखों ने न केवल जागरूकता फैलाने का कार्य किया, बल्कि यह स्वतंत्रता संग्राम की आग को और भड़काने में भी मदद की।

दमनकारी नीतियों के बावजूद, भारतीय पत्रकारों ने कभी भी हार नहीं मानी। गुप्त प्रेस का विकास इसी समय में हुआ, जहां स्वतंत्रता सेनानियों ने गुप्त रूप से पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। भगत सिंह और उनके साथियों ने 'किरती' और 'नवजवान' जैसी पत्रिकाओं के माध्यम से स्वतंत्रता के विचारों को फैलाने का कार्य किया। इन पत्रिकाओं ने न केवल युवाओं को प्रेरित किया, बल्कि उन्होंने क्रांतिकारी विचारों को भी जन-जन तक पहुँचाया।

महात्मा गांधी ने भी इस दमन के खिलाफ अपनी आवाज उठाई। उन्होंने 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' पत्रिकाओं के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों की आलोचना की और जन जागरूकता बढ़ाने का कार्य किया। गांधीजी का मानना था कि पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की आवाज़ बनकर काम करने का एक प्रभावी साधन है।

इसके अलावा, इस समय कई सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलनों का भी उदय हुआ, जिन्होंने पत्रकारिता को एक नया दिशा दी। महिला पत्रकारों ने भी इस संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कस्तूरबा गांधी, कमला दासगुप्ता, और अन्य महिलाओं ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया, बल्कि उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक मुद्दों को उजागर किया।

इस प्रकार, भारतीय पत्रकारिता पर ब्रिटिश दमन और प्रतिरोध का यह इतिहास न केवल एक संघर्ष का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय समाज के परिवर्तन का भी एक महत्वपूर्ण अंग है। इसने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को गति दी, बल्कि भारतीय जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। पत्रकारिता ने न केवल राजनीतिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन का भी एक प्रभावी साधन बन गई। अंततः, यह दमन और प्रतिरोध भारतीय पत्रकारिता के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जिसने स्वतंत्रता के संघर्ष को और अधिक प्रबल बना दिया।

**स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता का सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव**

स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता ने भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला, जिसने न केवल राजनीतिक जागरूकता बढ़ाई, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। 19वीं और 20वीं शताब्दी में, जब भारतीय पत्रकारिता का विकास हो रहा था, तब यह एक मंच बना जहाँ विचारों का आदान-प्रदान हुआ और समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज़ को सुना गया। उस समय, पत्रकारिता ने भारतीय समाज में व्याप्त कई सामाजिक बुराइयों, जैसे जातिवाद, छुआछूत, और महिलाओं के अधिकारों पर ध्यान केंद्रित किया। कई पत्रकारों और लेखकों ने अपने लेखों के माध्यम से इन समस्याओं को उजागर किया और समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य किया।

उदाहरण के लिए, राजा राममोहन राय ने 'बंगाल गजट' में अपने विचार प्रस्तुत किए, जिसमें उन्होंने सामाजिक सुधारों की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, और महिलाओं की शिक्षा जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला, जिससे समाज में जागरूकता बढ़ी और सुधारों की दिशा में कदम

उठाए गए। उनके विचारों ने न केवल भारतीय समाज को जागरूक किया, बल्कि उन्होंने भारतीय संस्कृति में एक नई चेतना का संचार किया।

महात्मा गांधी ने भी पत्रकारिता का उपयोग कर सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा दिया। उनकी 'हरिजन' पत्रिका ने अछूतों और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों की समस्याओं को सामने रखा। गांधीजी का मानना था कि सभी वर्गों के लिए समान अधिकार होना आवश्यक है, और उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से समाज को इस दिशा में प्रेरित किया। उनकी पत्रकारिता ने समाज में सहिष्णुता और एकता की भावना को बढ़ावा दिया, जिससे विभिन्न जातियों और धर्मों के बीच समर्पण की भावना विकसित हुई।

इसके अलावा, स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता ने भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेखकों और पत्रकारों ने भारतीय कला, साहित्य, और संस्कृति की विशेषताओं को उजागर किया। उन्होंने भारतीय भाषा और साहित्य को समृद्ध करने के लिए अनेक प्रयास किए। उर्दू, हिंदी, और बंगाली भाषाओं में प्रकाशित पत्रिकाओं ने साहित्यिक आंदोलनों को प्रोत्साहित किया और भारतीय सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया।

साथ ही, पत्रकारिता ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने विचारों को फैलाने के लिए पत्रिकाओं का सहारा लिया, जिससे जनता में राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई। इस प्रकार, पत्रकारिता ने केवल राजनीतिक बदलाव ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता का सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव अत्यंत गहरा था। इसने न केवल समाज को जागरूक किया, बल्कि इसे एक नई दिशा भी प्रदान की। पत्रकारिता ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया, जिससे लोगों में सामाजिक सुधारों की आवश्यकता का एहसास हुआ। अंततः, यह पत्रकारिता का युग एक ऐसी नींव तैयार करने में सफल रहा, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को गति दी और समाज में व्यापक परिवर्तन लाने में मदद की। स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता ने न केवल राजनीतिक जागरूकता बढ़ाई, बल्कि यह समाज को एकजुट करने और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**निष्कर्ष**:

स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता का अध्ययन भारतीय समाज, संस्कृति और राजनीति के विकास को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन ने न केवल उस समय के पत्रकारों के विचारों और संघर्षों को उजागर किया, बल्कि यह भी दर्शाया कि कैसे पत्रकारिता ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 19वीं और

20वीं सदी के प्रारंभ में, जब भारतीय पत्रकारिता अपने पंख फैला रही थी, तब यह एक ऐसा मंच बना जहाँ समाज के विभिन्न वर्गों की आवाज़ को सुना जा सका। पत्रकारों ने सामाजिक बुराइयों, जातिवाद, छुआछूत, और महिलाओं के अधिकारों जैसे मुद्दों पर जोर दिया, जिससे समाज में जागरूकता और परिवर्तन की आवश्यकता का एहसास हुआ। इस संदर्भ में, महात्मा गांधी और लोकमान्य तिलक जैसे नेताओं की पत्रकारिता ने न केवल राजनीतिक मुद्दों को उठाया, बल्कि उन्होंने समाज में नैतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। गांधीजी का मानना था कि पत्रकारिता को समाज की आवाज़ बनकर काम करना चाहिए, और यही विचार उनके लेखन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

ब्रिटिश सरकार के दमनकारी नीतियों के बावजूद, स्वतंत्रता पूर्व की पत्रकारिता ने कभी भी अपने उद्देश्यों को नहीं छोड़ा। पत्रकारों ने गुप्त प्रेस के माध्यम से, साम्राज्यवादी नीतियों का विरोध किया और जन जागरूकता को बढ़ावा दिया। यह पत्रकारिता का युग न केवल राजनीतिक गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण था, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और सामाजिक पुनर्जागरण के लिए भी एक महत्वपूर्ण चरण था। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता पूर्व की पत्रकारिता ने भारतीय जनमानस में एक नई चेतना का संचार किया और लोगों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। यह न केवल स्वतंत्रता संग्राम का एक हिस्सा था, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र की नींव को मजबूत करने का भी एक साधन बना। स्वतंत्रता पूर्व की पत्रकारिता का अध्ययन हमें यह सिखाता है कि पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज में परिवर्तन लाने का एक सशक्त उपकरण है। यह एक ऐसा दर्पण है, जिसमें हम अपने अतीत को देख सकते हैं और समझ सकते हैं कि कैसे विचारों और स्वतंत्रता की भावना ने हमें एकजुट किया। आज, जब हम पत्रकारिता के महत्व को समझते हैं, यह अध्ययन हमें प्रेरित करता है कि हम स्वतंत्रता और सत्य की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहें। इस प्रकार, स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता का अध्ययन आज भी प्रासंगिक है और हमें एक उज्जवल भविष्य की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

अवस्थी, ए। (2015). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता की भूमिका। नई दिल्लीः ऋषि प्रकाशन।

बनर्जी, एस. (2006). स्वतंत्रता और प्रेसः भारतीय पत्रकारिता पर एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। कोलकाताः कल्याणी पब्लिशर्स।

चौधरी, आर. (2012). भारतीय पत्रकारिता पर ब्रिटिश सेंसरशिप का प्रभाव। जर्नल ऑफ मीडिया स्टडीज, 12 (1) 45-58।

दत्ता, ए. (2009). गांधी और प्रेसः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता की भूमिका। जयपुरः रावत प्रकाशन।

गुप्ता, आर. (2011). असहमति की आवाज़ः स्वतंत्रता पूर्व भारत में पत्रकारिता की भूमिका। मुंबईः लोकप्रिय प्रकाशन।

अय्यर, के. (2008). स्वतंत्रता संग्राम में स्थानीय भाषा की प्रेस का प्रभाव। भारतीय ऐतिहासिक समीक्षा, 35 (2) 235-248।

जैन, एम. (2014). भारत में स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता का सांस्कृतिक प्रभाव। दिल्लीः एकेडेमिक फाउंडेशन।

कपूर, आर. (2010). पत्रकारिता और स्वतंत्रता आंदोलनः एक विश्लेषण। जर्नल ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, 25 (3) 115-130।

कुमार, ए. (2013). ब्रिटिश राज के दौरान भारतीय पत्रकारिता का विकास। मीडिया इतिहास, 19 (4) 335-350।

मिश्रा, एस. (2007) औपनिवेशिक भारत में प्रेस कानून और सेंसरशिप। पटनाः बिहार बुक डिपो।

नारायण, पी। (2016). भारत में प्रेस की स्वतंत्रता के लिए संघर्षः ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन प्रासंगिकता। नई दिल्लीः रूपा प्रकाशन।

प्रसाद, वी. (2012). भारतीय राष्ट्रवाद को आकार देने में पत्रकारिता की भूमिका। राष्ट्रवाद अध्ययन के जर्नल, 8 (1) 67-82।

राघवन, एस। (2005). भारत में स्थानीय प्रेस और सामाजिक सुधार। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 14 (2) 204-218।

सेन, ए. (2019). अतीत की आवाज़ः स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता का एक अध्ययन। दिल्लीः ओरिएंट ब्लैकस्वान।

शर्मा, के. (2011). प्रेस की स्वतंत्रता और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलनः एक महत्वपूर्ण अवलोकन। ऐतिहासिक समाजशास्त्र के जर्नल, 24 (3) 410-423।